International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-06-2020; Accepted: 12-07-2020; Published: 27-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 60-62

मालवी लोक समाज में प्रचलित सामाजिक मान्यताए

रचना जैन
पी.डी.एफ. शोधार्थी, हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मालवी लोकसंस्कृति की धारा अनेक वर्षों से पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रवाहमान है किसी प्रदेष के सामान्य जन–जीवन से इसका संबंध होता है। इसके अन्तर्गत समाज में प्रचलित विभिन्न परम्पराएँ रीति–रिवाज, आचार–विचार, कर्मकाण्ड, संस्कार, लोक विष्वास तथा क्रियाकलाप आते हैं। घर–आँगन, गली–मोहल्ले, चबूतरें और चौपालों पर यहाँ की संस्कृति मालवा जनसामान्य के जीवन को आधार देती हैं। सुख–दुःख का अवसर हो या व्रत–पर्व और उत्सव का, जीवन के संस्कार हो या पूजा–अनुष्ठान सब तरफ आपको गीत–संगीत, कथा–वार्ता, चित्रावण–माण्डने जैसी कला रूपों में मालवी मन डूबा हुआ नजर आता है। यह ठेठ मालवीपन पुराने ग्रंथों से लेकर वर्तमान में प्रचलित लोक विष्वासों, परम्पराओं में निरन्तर छलकता हुआ दिखाई देता है। अतः लोक संस्कृति को क्षेत्र अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक है। लोक संस्कृति में मानव जीवन के समस्त अंगों के साथ लोक साहित्य भी समाहित है।

मूल शब्दः मालवा, लोक, समाज, संस्कृति, लोक विष्वास, सामाजिक मान्यताएँ

प्रस्तावना
जीवन को सरस, आनन्दमय तथा सुखमय बनाने के लिए मानव ने साहित्य का निर्माण किया है। मानव की तरह साहित्य भी हित– चिन्तन करता है। सामान्यतः मानव का हित–चिंतन संकुचित तथा अपने तक होता है परन्तु साहित्य का चिंतन समस्त मानव जगत की कल्याण की भावना से ओत–प्रोत होता है। जिस प्रकार मानव जीवन पाँच तत्वों (पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु एवं आकाष) से मिलकर बना हुआ है, उसी प्रकार मालवी लोक संस्कृति के भी पाँच तत्व माने जा सकते हैं। इसी को आधार मानकर प्रसिद्ध लोक मनीषि 'डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय' ने लोक संस्कृति को पाँच भागों में विभाजित किया हैं यथा –

1. लोक विष्वास तथा अंध–परंपराएँ
2. संस्कार आचार–विचार तथा विधि–विधान मान्यताएँ
3. सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक संस्थाएँ
4. धार्मिक तथा आध्यात्मिक मान्यताएँ
5. लोक साहित्य

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम लोक संस्कृति को दो भागों जिसके अन्तर्गत प्रथम भाग में सामाजिक पहलू और साहित्य पहलू को द्वितिय रूप में लिखा जा सकता है।
इसमें सामाजिक पहलू के अन्तर्गत लोक विष्वास, लोक परम्पराएँ, संस्कार, विभिन्न प्रकार की मान्यताओं के साथ विभिन्न तरह की संस्थाओं को इसमें स्थान दिया जा सकता है। वहीं साहित्य पक्ष में मालवी जन मानस के रोम–रोम में बसे हुए लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोककहावतें, लोक पहेलियाँ आदि को रखा गया है। इस शोधालेख में मालवी अंचल में प्रचलित लोक विष्वास तथा मान्यताओं, परम्पराओं पर चर्चा करेंगे।
लोक विष्वास लोकमन की वस्तु है। लोकमन जिन मान्यताओं को स्वीकार कर लेता है, वे लोक विष्वास के रूप में प्रतिष्ठित हो जाते है। मालवी लोक संस्कृति में विष्वास दूध में पानी की तरह समाये हुए है, जिनका अलग होना कठिन दिखाई देता है। ग्रामीण जन–जीवन के साथ ही प्रषिक्षित प्रबुद्ध वर्ग पर इनका प्रभावन बना हुआ है। ये सर्वमान्य है।
मालवा में अनेक शकुन–अपषकुन प्रचलित है। जैसे प्रातः काल पानी भरा कलष लिये पनिहारिन को देखना, गाय का दूध पीते हुए बछड़े का दिखाई देना आदि शुभ संकेत माने जाते है लेकिन इसके विपरीत यात्रा पर जाते समय बिल्ली का रास्ता काटना, छींक का आना आदि अषुभ माने जाते है। इस भाव का व्यक्त करती हुई जनश्रुति प्रसिद्ध है –

'' छींकत नाये, छींकत खाये, छींकत रहिये सोय।
छींकत पर घर कदी नी जाये, आछा कदे नी होय।।''

अर्थात् स्नान, भोजन तथा विश्राम करते समय छींक का आना शुभ है लेकिन दूसरे के घर जाते समय छीक होने पर कदापि नहीं जाना चाहिए क्योंकि इससे झगड़ा होने की पर आषंका रहती है। लेकिन जब एक व्यक्ति द्वारा ही एक से अधिक छींक आये तो कार्य की सिद्धी होती है। यथा –

''एक नाक दो छींक।
काम बने भौत ठीक।।''

अर्थात् छींक आने पर उसका मान रखने से वह अषुभ होने पर हमें बचाती है और आदर नहीं करने पर अनर्थ कर देती हैं। इस भाव को व्यक्त करता हुआ एक लोकगीत होता है।

''पेली जो छींक म्हारा आंगण में आई
दुसरी जो छींक म्हारे पणघट पे आई
तीसरी में घडूल्यों फुटो म्हारा राजा
मणदल दुतेली ने सासू आगे कई दिया
सासू ने मारी नणद ने पकड़ी
देवर ने करदी घर से भायर म्हारा राजा
आदी के रात गोरी पीयर सिदार्या
सामे से अईग्या परण्या सायब म्हारा राजा
आदी के रात गोरी तम कां सिदार्या
सासू ने मारी नणद ने पकड़ी.....
सासू तमारी गोरी काल मरी जावेगा।
नणद तमारी गोरी सासरे पोंचावा
देवर आदा घर को मालक म्हारा राजा।।''

उपर्युक्त लोकगीत में यह संकेत दिए गए हैं कि छींक का मान नहीं रखने पर वह परिवार या कुल का विघटन भी कर सकती है। इसलिए हमारे मालवी समुदाय में छींक को माँ भवानी का स्थान दिया गया है और किसी भी प्रकार का मांगलिक कार्य करते समय उसे विभिन्न प्रकार के आभूषण चढ़ाये जाने की परम्परा भी इस क्षेत्र में मिलती है। इस भाव को स्पष्ट करता हुआ एक मालवी लोकगीत हमारे समाज की नारियों द्वारा यथासमय गाया जाता है। देखिये –

''हो जी, छींक भवानी के भम्मर सोवे
टीका की छब न्यारी
हो जी, जुग–जुग जीवा म्हारा छींकण वाला
चट जनम्या ने पट छीक्यां
हो जी छींक भवानी के ठुस्सी सोवे
माला की छब न्यारी
हो जी, छींक भवानी के बाजुबंद सौवे
झूमणा की छब न्यारी
हो जी, छींक भवानी के चूड़लो सौवे
हिरा की छब न्यारी
हो जी, छींक भवानी के कड़िया सोवे
बिछिया की छब न्यारी
हो जी, जुग–जुग जीवो म्हारा छींकण वाला
चट जनग्या ने पर छींक्या।''

प्रस्तुत लोकगीत में जहाँ एक ओर छींकमाता को विभिन्न गहनें पहनाये जाते है वहीं दूसरी ओर इस मान्यता के दर्षन भी होते है कि जन्म के तुरंत बाद बालक द्वारा छींकना उसके लिए स्वास्थ्यवर्धन एवं शुभ्रता का संकेत होता है। जब बालक या कोई व्यक्ति घर से बाहर जाते है तब उनकी सफलता और असफलता के सम्बन्ध में अनेक प्रष्न मन में उपस्थित रहते है जिनका समाधान वह बाहरी संकेतों के द्वारा करते है। यह वर्तमान परिवेष में भी देखे जाते हैं। ऐसी लोक मान्यता है कि –

''नारि सुहागिन जल भर लावैं।
दहि मछली जो सनमुख आवैं।।''

अर्थात् सौभाग्यवती नारी जीवन की परिपूर्णता का द्योतक जल से लबालब भरा हुआ कलष लिये हुए सामने दिख जाये तो यह अत्यंत मंगलकारी शगुन माना जाता है। प्रत्येक धार्मिक कार्य में जल से भरे कलष का विषेष महत्व रहता है। इसके अतिरिक्त धार्मिक लोकविष्वास के अन्तर्गत – संध्या समय घर का द्वार खुला रखते है, संध्या समय झाड़ू लगाने से लक्ष्मी जाती है इसके साथ अनेक देवी–देवताओं सम्बन्धी लोकमान्यताएं भी है। नवरात्रि में देवी की पूजा आराधना पर विषेष महत्व दिया जाता है। दीपावली के दिन माँ लक्ष्मी की भक्ति की जाती है। जिससे महालक्ष्मी की असीम कृपा घर–परिवार पर सदैव बना रहे। चेचक को माता मानते है और शीतला माता को सींचते हैं। देवनारायण, कालेसर महाराज, रामदेवजी आदि ग्रामीण देवता के विषय में अनेक विष्वास है जिसके कारण लोग इनकी पूजा करते हैं। सत्यनारायण भगवान का व्रत, संतोषी माता का व्रत वैभव लक्ष्मी का व्रत, सांई बाबा का व्रत तथा अन्य व्रतों से सम्बन्धित अनेक कथाएँ प्रचलित है। इसके साथ ही कई व्रत ऐसे हैं जिनमें वृक्षों की पूजा–अर्चना की परम्परा रहती है। जैसे –दषा माता का व्रत, वट सावित्री का व्रत आदि वृक्षों की आराधना करने की परम्परा रही है। उन्हें देवत्व की उपाधि दी गई है। वृक्षों को मानव की मूल आवष्यकताओं से भी जोड़ा गया है।

अतः किसी ने ठीक ही कहा है – वृक्ष ही जल हिन्दू परिवार के आंगन में तुलसी का पौधा अवष्य होता है। तुलसी पत्र का सेवन प्रसाद के रूप में किया जाता है। पीपल के वृक्ष की पूजा करना, व्रत रखकर उसकी परिक्रमा करना, जल अर्पण करना पुण्य कार्य है और पीपल को काटना पाप माना जाता है। बेल के वृक्ष, फल और बेलपत्र की महिमा इतनी है कि भगवान षिव को चढ़ाये जाते हैं। संध्या समय किसी वृक्ष के पत्ते को तोड़ना मना है – ऐसा माना जाता है कि वृक्ष सो जाते हैं और जो व्यक्ति हरे–भरे वृक्षों को काटता है उसकी संतान मर जाती है। वृक्ष के धार्मिक महत्व के साथ ही उनका स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अनेक प्रकार से लाभकारी होते है। वृक्ष मनुष्य की श्वसन प्रक्रिया से दूषित कार्बन–डाई–ऑक्साइड को ग्रहण कर प्राणदायी ऑक्सीजन देते है जो हमारे भोजन को रसमय बनाते है इसके अतिरिक्त छाल और जड़ों से अनेक औषधियां दवाईयां बनाई जाती है।

इसके अतिरिक्त पषु–पक्षियों के शकुन–अपषकुन संबंधी मान्यता भी है। छिपकली तथा अन्य जन्तुओं के बारे में अनेंक अंधविष्वास माने गये है। सामान्यतः छिपकली का शरीर के विभिन्न अंगों पर गिरने से विभिन्न फल मिलते हैं। ऐसा लोकविष्वास है–

''सर पर गिरे राज सुख पावै,
जो ललाट ऐष्वर्य ही आवें।
कंठ मिलावै पिय कौ हुवाई,
कांधे पड़े विजयी दिखावे।।''

अतः छिपकली सिर पर गिरे तो राजसुख ललाट पर गिरे तो ऐष्वर्य प्राप्ति, कंठ पर गिरने से प्रिय व्यक्ति से भेंट और कंधे पर गिरे तो विजयी मिलती है।

ऐसी लोकमान्यता है कि गौरेया चिड़िया, नीलगाय का दिखना शकुन माना जाता है ऐसी जनश्रुति है –

''सदा भवानी दाहणी, सन्मुख होय गनेस।
पांच देव रिच्छा करे, ब्रह्म, विष्णु, महेस।''

अर्थात यहाँ भवानी का तात्पर्य सोन चिड़ी से है।

पक्षियों में कौवा हम सबके जीवन में इतना बना हुआ है कि जाने–अनजाने ही हम उसे स्मरण करते रहते हैं। कभी पौराणिक कथाओं के माध्यम से तो कहीं अंधविष्वास के रूप में कौवे के विषय में कई मान्यताएँ देखी–सुनी जाती रही है जिनका स्वरूप अभी भी ग्रामीण संस्कृति में परिलक्षित होता है। सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि यदि किसी के घर की मुंडेर पर कौवा कांव–कांव की आवाज करते हुए दिखई देता है तो वह अतिथि के आगमन का शुभ संकेत है। वहीं कुछ स्थानों पर निंदक का कारण भी बनता है। यदि किसी व्यक्ति के सिर पर बैठना आत्मीजन की मृत्यु का कारण होता है। एक प्राचीन लोक विष्वास के आधुनिक पीढ़ी तक इस प्रकार पहुँचाया गया है–

''झूठ बोले कागला काटे, कारे कागला ती डरियों।''

अर्थात् यदि कोई व्यक्ति मिथ्यावचन कहता है तो उसे कौआ महाराज का डर बताया जाता है। ऐसा लोकविष्वास मालवांचल में व्याप्त है।

निष्कर्ष

इस प्रकार अनेक लोक विष्वास, लोक परम्पराएँ मालवी जनजीवन का विषेष अंग बनी हुई है। अन्ततः लोक विष्वास लोक चेतना तथा संस्कृति का दर्पण है। किसी भी अंचल की लोक संस्कृति को समझने के लिए लोक विष्वास को जानना जरूरी है। आज भी समाज का बहुत बड़ा समुदाय लोक विष्वास एवं मान्यताओं से जुड़ा हुआ है तथा इससे प्रभावित होता दिखाई देता है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी – तुलनात्मक लोकोक्ति साहित्य भाग–2, पृष्ठ 630
2. वहीं पृष्ठ – 639
3. श्रीमती कृष्णा वर्मा – जनपदीय संस्कार गीत, मध्यप्रदेष के निमाड़ और मालवांचल में प्रचलित संस्कार गीत, संपादक डॉ. कपिल तिवारी, पृष्ठ 338
4. वहीं पृष्ठ – 386
5. कृष्णदेव उपाध्याय – लोक संस्कृति रूपरेखा, इलाहबाद सं. 2009, पृष्ठ 42
6. निजी संकलन – डॉ. रचना जैन